

# सायनवाद के अंतर्विरोध: संज्ञानात्मक असंगति पर आधारित एक राजनीतिक परियोजना

आधुनिक इज़राइल राज्य, सायनवाद के राजनीतिक अवतार के रूप में, इतने स्पष्ट अंतर्विरोधों पर निर्मित है कि इसके लिए न केवल वैचारिक विकृतियों की आवश्यकता है, बल्कि कानूनी, नैतिक और ऐतिहासिक तर्क को निलंबित करने की भी आवश्यकता है। यह उस लोकतांत्रिक शरणस्थल से बहुत दूर है, जैसा कि यह दावा करता है; इज़राइल ने नस्लीय-राष्ट्रीय श्रेष्ठता को संस्थागत रूप दिया है, सैन्य कब्जे को लागू किया है, और व्यवस्थित छल में संलग्न रहा है—एक प्रचार संरचना पर निर्भर है जो अपनी ही असंगतियों के बोझ तले ढह जाती है।

इज़राइल के बारे में सत्य बोलना यहूदी पहचान पर हमला नहीं है। इसके विपरीत: सायनवाद के कुछ सबसे मुखर और सैद्धांतिक विरोधी यहूदी बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक, रब्बी और फासीवाद से बचे लोग रहे हैं—जिनमें **अल्बर्ट आइंस्टीन** शामिल हैं, जिन्होंने 1948 में **द न्यूयॉर्क टाइम्स** को लिखे पत्र में सायनवादी नेता **मेनकेम बेगिन** को फासीवादी कहा था। इज़राइल की आलोचना करना यहूदी-विरोधी होना नहीं है; यह उस नैतिक और राजनीतिक पतन का विरोध करना है जो सायनवाद ने यहूदी न्याय की परंपरा और उन फिलिस्तीनी लोगों पर डाला है जो इसके अंतर्विरोधों की दैनिक कीमत चुकाते हैं।

## एक “यहूदी और लोकतांत्रिक” राज्य: व्यवहार में एक विरोधाभास

इज़राइल दावा करता है कि यह एक यहूदी राज्य और अपने सभी नागरिकों के लिए एक लोकतंत्र दोनों है। यह दावा केवल एक अंतर्विरोध नहीं है; यह एक सावधानीपूर्वक रचा गया झूठ है। **2018 का राष्ट्र-राज्य कानून** स्पष्ट रूप से कहता है कि “इज़राइल राज्य में राष्ट्रीय आत्मनिर्णय का अधिकार केवल यहूदी लोगों के लिए है।” अरबी, जो कभी आधिकारिक भाषा थी, को हटा दिया गया। इस बीच, **इज़राइल की 20% आबादी—फिलिस्तीनी नागरिक—कानूनी रूप से द्वितीय श्रेणी के नागरिक हैं**, जिन्हें आवास, शिक्षा और राजनीतिक प्रभाव तक समान पहुंच से वंचित किया जाता है।

जातीय विशेषाधिकार पर आधारित एक राज्य कैसे दावा कर सकता है कि वह लोकतांत्रिक है? यह नहीं कर सकता। कोई भी लोकतंत्र जो इस नाम के योग्य हो, नस्लीय या धार्मिक पदानुक्रम को अपने मूल कानून में नहीं डालता। इज़राइल का लोकतंत्र यहूदियों के लिए, और केवल यहूदियों के लिए काम करता है।

## आलोचना को यहूदी-विरोधी कहना: जवाबदेही के खिलाफ एक ढाल

**इज़राइल की आलोचना को यहूदी-विरोधी** कहना न केवल अतार्किक है—यह बौद्धिक रूप से बेईमान है। **IHRA की कार्यकारी परिभाषा** जैसे परिभाषाओं को अपनाकर, इज़राइल यहूदी पीड़ा को विरोध को चुप कराने के लिए हथियार बनाता है। यह उन लोगों को यह संसारी-विरोधियों के बराबर रखता है जो रंगभेद, कब्जे और नस्लीय सफाई का विरोध करते हैं, जबकि उन कई यहूदियों को अनदेखा करता है—धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष—जो सायनवाद को यहूदी नैतिकता के साथ विश्वासघात मानते हैं।

आइंस्टीन, **हन्ना अरेंडट**, और **मार्टिन बुबेर** ने चेतावनी दी थी कि राष्ट्रवाद और हिंसा पर आधारित एक यहूदी राज्य तानाशाही में समाप्त होगा। समकालीन समूह जैसे **ज्यूइश वॉयस फॉर पीस**, **इफनॉटनाउ**, और **रूढ़िवादी यहूदी-विरोधी यहूदी** जैसे **नेटूरी कार्ता** इस परंपरा को जारी रखते हैं। लेकिन इज़राइल के वैचारिक ढांचे में, इन यहूदियों को “स्वयं-घृणा करने वाले” के रूप में बदनाम किया जाता है, जो एक ऐसी स्थिति के लिए एक भयानक विडंबना है जो सभी यहूदियों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है।

यहूदी पहचान को एक एकल सायनवादी कथानक में समतल करना यहूदी बहुलता पर हमला है—और यहूदी इतिहास के साथ एक गहरा विश्वासघात है।

## चयनात्मक कानूनी युद्ध: अंतरराष्ट्रीय कानून के रूप में राजनीतिक रंगमंच

जब गाजा में अस्पतालों पर इज़राइली जेट विमानों द्वारा बमबारी की जाती है, तो प्रतिक्रिया चुप्पी या अस्पष्टता होती है: “हमास ने इसे आधार के रूप में इस्तेमाल किया।” जब एक ईरानी मिसाइल इज़राइली अस्पताल के पास नुकसान पहुंचाती है, तो इसे तुरंत **युद्ध अपराध** करार दिया जाता है। यह कानूनी तर्क नहीं है—यह जनसंपर्क है जो न्याय के रूप में प्रच्छन्न है।

इज़राइल अंतरराष्ट्रीय कानून को चुनिंदा रूप से चुनता है। यह **संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 51** के तहत आत्मरक्षा के अधिकार का आह्वान करता है, लेकिन **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद** के बाध्यकारी प्रस्तावों और **अंतरराष्ट्रीय न्यायालय** के फैसलों को खारिज करता है। यह कानून से ऊपर कार्य करता है क्योंकि इसका प्रमुख सहयोगी, संयुक्त राज्य अमेरिका, उच्चतम स्तरों पर दण्डमुक्ति सुनिश्चित करता है।

यह उन मानदंडों द्वारा शासित लोकतंत्र का व्यवहार नहीं है—यह एक शरारती अभिनेता का व्यवहार है जो शक्ति द्वारा संरक्षित है।

## मेनकेम बेगिन: आतंकवादी से प्रधानमंत्री तक

शायद इज़राइल के “आतंकवाद से लड़ने” के कथानक में सबसे स्पष्ट अंतर्विरोध **मेनकेम बेगिन** के जीवन में निहित है, जो दक्षिणपंथी लिक्वुड पार्टी के संस्थापक और इज़राइल के छठे प्रधानमंत्री थे। अपने राजनीतिक उभार से पहले, बेगिन **इरगुन** के कमांडर थे, एक सायनवादी अर्धसैनिक समूह जो निर्विवाद **आतंकवादी हमलों** की एक श्रृंखला के लिए जिम्मेदार था:

- **दर यासीन नरसंहार (1948)**: 100 से अधिक फिलिस्तीनी नागरिकों की हत्या की गई।
- **किंग डेविड होटल बमबारी (1946)**: एक ब्रिटिश प्रशासनिक केंद्र में 91 लोग मारे गए।
- **रोम में ब्रिटिश दूतावास पर बमबारी और वियना में होटल साखर पर बमबारी** अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के कृत्य थे।
- ब्रिटिश मंडेट सरकार ने बेगिन के सिर पर **£10,000 का इनाम** रखा था। उस समय की सभी कानूनी और राजनीतिक परिभाषाओं के अनुसार, वह एक **आतंकवादी** था।

फिर भी, बेगिन बाद में इज़राइली केसेट में शामिल हुए, लिक्वुड पार्टी की स्थापना की और प्रधानमंत्री बने। आज, उनका नाम इज़राइल में राजमार्गों और शैक्षणिक संस्थानों को सजाता है।

इसकी तुलना फिलिस्तीनियों के साथ व्यवहार से करें। सैन्य कब्जे के खिलाफ कोई भी सशस्त्र प्रतिरोध, भले ही वह सैनिकों या अवैध बस्तियों पर लक्षित हो, तुरंत आतंकवाद के रूप में लेबल किया जाता है। वही कृत्य जो इज़राइल की स्थापना में मदद करते थे, उनकी प्रशंसा की जाती है; उत्पीड़ितों के समान कृत्यों को राक्षसी बनाया जाता है।

यह पाखंड संयोगवश नहीं है—यह मूलभूत है।

## “युद्ध” जो युद्ध नहीं है

इज़राइल गाजा में अपने अभियानों को युद्ध के कृत्यों के रूप में प्रस्तुत करता है। फिर भी, यह फिलिस्तीन को एक राज्य और हमास को एक वैध युद्धक बल के रूप में मान्यता देने से इनकार करता है। यह जानबूझकर की गई अस्पष्टता इज़राइल को दोनों दिशाओं में कानूनी दायित्वों से बचने की अनुमति देती है: यह बमबारी को उचित ठहराने के लिए युद्ध के नियमों का आह्वान करता है, लेकिन पकड़े गए लड़ाकों के लिए **युद्धबंदी (POW)** की स्थिति को अस्वीकार करता है। इज़राइली बंधकों को उनकी सैन्य स्थिति की परवाह किए बिना “बंधक” कहा जाता है, जबकि फिलिस्तीनियों से कानूनी अधिकार और मानवीय गरिमा दोनों को नकारा जाता है।

यह केवल एक अंतर्विरोध नहीं है—यह **असमान युद्ध का एक तंत्र है जो कानूनी हेरफेर के माध्यम से वैध बनाया गया है।**

## स्वदेशीपन का हथियारीकरण

सायनवादी विचारधारा इज़राइल की भूमि के साथ 3,000 साल पुराने संबंध का दावा करती है, अक्सर **आध्यात्मिक विरासत** को **राजनीतिक संप्रभुता** के साथ भ्रमित करते हुए। फिर भी, आज के अधिकांश यहूदी इज़राइलियों **यूरोपीय आप्रवासियों** के वंशज हैं, जिनमें से कई 20वीं सदी में आए थे। इस बीच, फिलिस्तीनी—मुस्लिम, ईसाई और यहूदी—1948 की नकबा से पहले पीढ़ियों तक निरंतर इस भूमि पर रहते थे।

1917 में, **फिलिस्तीन की 95% से अधिक आबादी अरबी बोलने वाली थी**। हिब्रू एक पूजनीय भाषा थी, बोली जाने वाली नहीं। सायनवादी स्वदेशीपन का दावा अक्सर भूमि को साझा करने के लिए नहीं, बल्कि फिलिस्तीनी उपस्थिति को पूरी तरह मिटाने के लिए कार्य करता है।

सच्चा स्वदेशीपन विस्थापन का साधन नहीं है—यह सह-अस्तित्व का आह्वान है। हालांकि, सायनवाद ने वापसी की भाषा का उपयोग निरंतर औपनिवेशिक विस्तार को उचित ठहराने के लिए किया है।

## **निष्कर्ष: उलटबांसी पर आधारित एक परियोजना**

सायनवाद, जैसा कि इज़राइल राज्य द्वारा अभ्यास किया जाता है, हर उस नैतिक और कानूनी मानदंड को उलट देता है जिसका वह दावा करता है। यह एक ऐसी दुनिया की मांग करता है जहां:

- **कब्जा रक्षा है, और प्रतिरोध आतंकवाद है**
- **नस्लवादी शासन लोकतंत्र है**
- **ऐतिहासिक स्मृति संपत्ति का शीर्षक बन जाती है**
- **युद्ध अपराधी प्रधानमंत्री बन जाते हैं**
- **यहूदी असहमति को मिटा दिया जाता है, और यहूदी राष्ट्रवाद को यहूदी पहचान के साथ समान माना जाता है**

इन उलटबांसियों को स्वीकार करना एक ऐसी वास्तविकता को स्वीकार करना है जहां सत्य वही है जो शक्ति कहती है। लेकिन लाखों लोग—फिलिस्तीनी, सायनवाद-विरोधी यहूदी, और सैद्धांतिक सहयोगी—इस नौटंकी में भाग लेने से इनकार करते हैं। वे मांग करते हैं कि कानून समान रूप से लागू हो। कि लोकतंत्र का अर्थ समानता हो। कि इतिहास का सम्मान किया जाए, न कि उसका शोषण किया जाए।

सायनवाद के खिलाफ खड़ा होना यहूदियों के खिलाफ खड़ा होना नहीं है। यह **यहूदियों के साथ खड़ा होना** है जैसे आइंस्टीन, जिन्होंने इसकी हिंसा में अंतहीन युद्धों का भविष्य देखा था। यह एक ऐसी दुनिया की मांग करना है जहां किसी भी राज्य के लिए, चाहे वह कितना भी पवित्र होने का दावा करे, न्याय को निलंबित न किया जाए।

सायनवाद ने तर्क की निलंबन की मांग की है। इस नौटंकी को समाप्त करने का समय आ गया है।